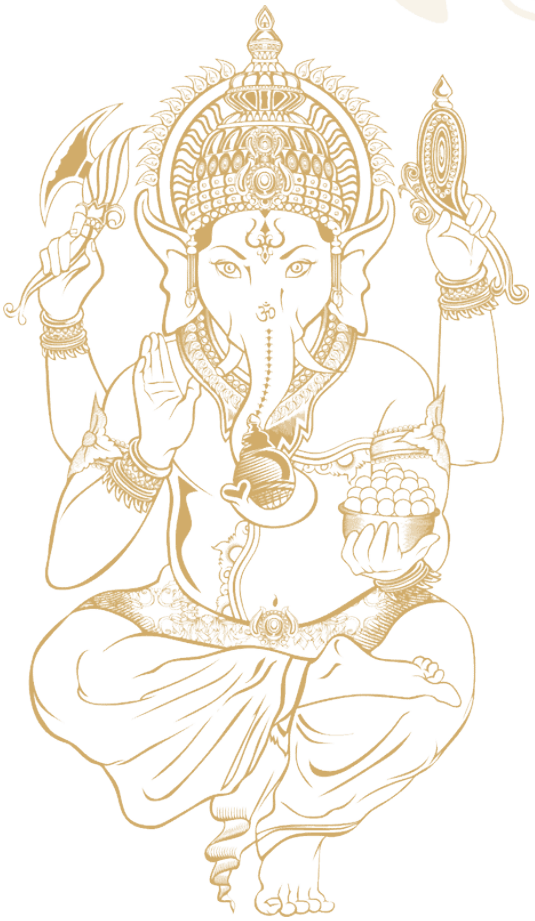

06 Feb 2026

10:08 AM

Delhi

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121179701

तिथि 06/02/2026 **समय** 10:08:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:25
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	18:52:12 घं
वेलान्तर	00:14:03 घं
सूर्योदय	07:06:36 घं
सूर्यास्त	18:04:09 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	फाल्गुन
पक्ष	कृष्ण
तिथि	5
नक्षत्र	हस्त
योग	धृति
करण	कौलव

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	महिष
नाड़ी	आद्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	मानव
वर्ग	मेष
युँजा	मध्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	ष-षडबली
पाया(रा.-न.)	ताम्र-रजत
होरा	शनि
चौघड़िया	अमृत

विंशोत्तरी

चन्द्र 5वर्ष 6मा 26दि

चन्द्र

06/02/2026
03/09/2031

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	06/02/2026
शनि	04/07/2027
बुध	03/12/2028
केतु	04/07/2029
शुक्र	05/03/2031
सूर्य	03/09/2031

योगिनी

संकटा 4वर्ष 5मा 15दि

संकटा

06/02/2026
23/07/2030

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	06/02/2026
भ्रामरी	23/07/2026
भद्रिका	02/09/2027
उल्का	01/01/2029
सिद्धा	23/07/2030

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			24:14:20	मीन	रेवती	3	बुध	राहु	---	0:00			
सूर्य			23:10:00	मक	श्रवण	4	चंद्र	सूर्य	शत्रु राशि	1.19	आत्मा	पितृ	जन्म
चंद्र			15:54:12	कन्या	हस्त	2	चंद्र	शनि	मित्र राशि	1.04	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	16:34:24	मक	श्रवण	2	चंद्र	शनि	उच्च राशि	0.98	भातृ	भातृ	जन्म
बुध			04:26:40	कुंभ	धनिष्ठा	4	मंगल	शुक्र	सम राशि	1.07	ज्ञाति	ज्ञाति	सम्पत
गुरु	व		22:35:13	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.45	अमात्य	धन	क्षेम
शुक्र			00:28:02	कुंभ	धनिष्ठा	3	मंगल	बुध	मित्र राशि	1.28	कलत्र	कलत्र	सम्पत
शनि			04:56:29	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	सम राशि	1.27	पुत्र	आयु	प्रत्यारि
राहु			14:51:08	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु			14:51:08	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

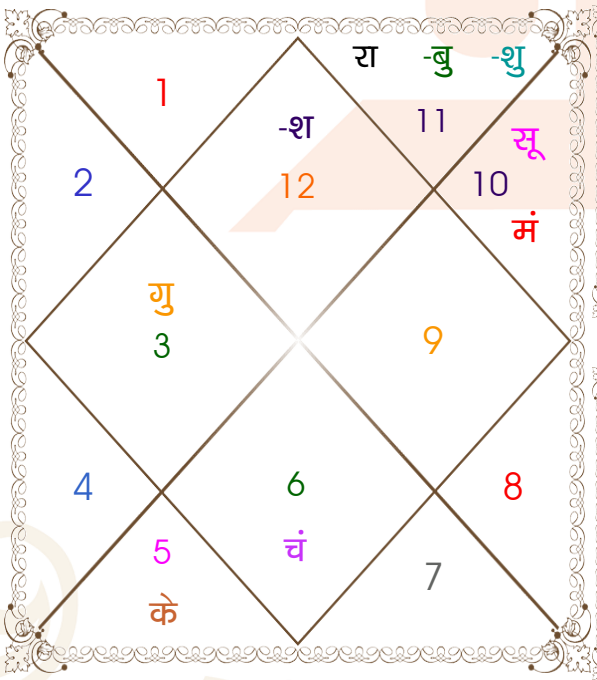

चन्द्र कुंडली

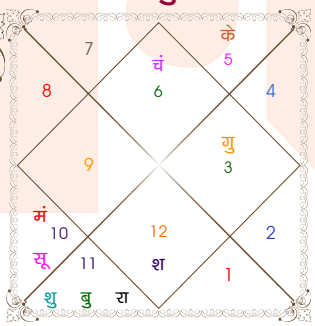

नवमांश कुंडली

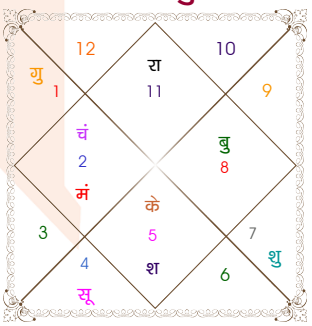

सर्वाष्टकवर्ग

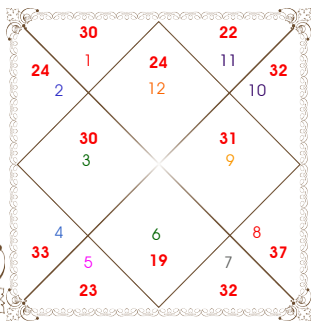

दशमांश कुंडली

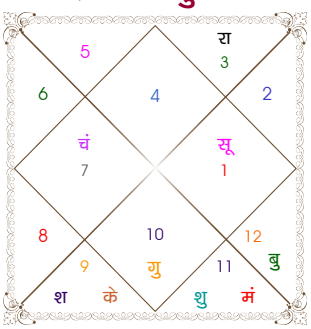

नक्षत्रफल

आप हस्त नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि कन्या तथा राशिस्वामी बुध होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका गण देव नाड़ी आद्य, योनि महिष,वर्ण वैश्य तथा वर्ग मेष होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके नाम का प्रारम्भ "ष" अक्षर से होगा।

आप नैसर्गिक रूप से दानशील पुरूष होंगे तथा यथा शक्ति जरूरतमंद लोगों को जीवन में दान देते रहेंगे। समाज में आप लोकप्रिय होंगे तथा आपकी ख्याति दूर दूर तक व्याप्त रहेगी। समाज के सभी वर्गों के प्रति आपके मन में सद्भाव विद्यमान रहेगा तथा अन्यजन भी आपको हार्दिक मान सम्मान प्रदान करेंगे। देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन मैं अगाध श्रद्धा का भाव रहेगा तथा इनके पूजन एवं सत्कार में आप सदैव तत्पर रहेंगे। इसके साथ ही आप अपने जीवन में विभिन्न प्रकार की सम्पत्तियों को अर्जित करके सुख पूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ रहेंगे।

दाता मनस्वी सुतरां यशस्वी भूदेवदेर्वाचनकृत्प्रयत्नतः।
प्रसूति काले यदि यस्य हस्तो हस्तोद्गता तस्य समस्तसम्पत्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक दाता, मनस्वी, अतियशवाला, देवता और ब्राह्मणों का भक्त तथा सर्वप्रकार की सम्पति से सदैव युक्त रहता है।

आप सांसारिक तथा भौतिक भोग्य पदार्थों का अपने जीवन में प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करने में सफल रहेंगे तथा परलौकिक कर्मों के लिए दान पुण्य इत्यादि धार्मिक क्रियाकलापों को भी सम्पन्न करते रहेंगे। इससे आप इस लोक तथा परलोक दोनों जगह आनन्द की प्राप्ति करेंगे। आप एक श्रेष्ठ विद्वान होंगे तथा आपकी बुद्धि भी अत्यन्त तीव्रता से युक्त रहेगी। फलतः बुद्धिचातुर्य से अपने सांसारिक कार्यों में सफलता अर्जित करेंगे। समाज के सभी वर्गों के परोपकार संबंधी कार्यों में आप पूर्णतया समर्पित रहेंगे तथा यत्न पूर्वक अपना तन मन धन से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही आप विपुल धन के स्वामी भी बनेंगे।

हस्तर्क्षे यदि कामधर्मनिरतः प्राज्ञोपकर्ता धनी।
जातकपरिजातः

अर्थात हस्त नक्षत्रोत्पन्न जातक सांसारिक भोग्य पदार्थ तथा पारलौकिक शुभ कर्मो को करने वाला तथा धनवान होता है।

उत्साह से आप हमेशा सुसम्पन्न दौरान आपकी- समस्त कार्य उत्साह पूर्वक ही सम्पन्न एवं सिद्ध होंगे। कभी कभी आप मन से कठोरता का भी प्रदर्शन करेंगे।

उत्साही धृष्टः पानपोळघृणी तस्करो हस्ते।
बृहज्जातकम्

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक उत्साही, लज्जाहीन, मदिरा का सेवन करने वाला, घृणा न करने वाला एवं तस्कर होता है।

अवसरानुकूल आप मिथ्याभाषण भी करेंगी। तथा स्वभाव से मदृता का आभास होगा। आप अपने समीपस्थ बन्धु बाधवों से भी युक्त रहेंगे तथा इनसे आपको सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इसके अतिरिक्त महिला वर्ग से भी आपके मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे।

असत्यवचनो धृष्टः सुरापी बन्धुवर्जितः।
हस्तो जातो नरश्चौरो जायते पारदारिकः।।
मानसागरी

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक झूठ बोलने वाला, निर्लज्ज, मद्यपान करने वाला बन्धुओं द्वारा वर्जित, चोर तथा अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाला होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ हैं। आप जीवन में धन धान्य से पूर्ण रूपेण सम्पन्न रहेंगे तथा श्रेष्ठ एवं गुणवान स्त्री को पत्नी के रूप में प्राप्त करेंगे। आप बहुमूल्य रत्नों तथा सोना चांदी आदि मूल्यवान धातुओं से भी सुसम्पन्न रहेंगे। देखने में आप का शरीर सुन्दर एवं स्वस्थ रहेगा। आप एक विद्वान पुरूष रहेंगे तथा चल अचल सम्पत्ति से भी आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक विभिन्न सुखसंसाधनों का आप नित्य उपभोग करते रहेंगे। आपकी सन्ततियां सुन्दर एवं गुणवान होंगी तथा आपका पारिवारिक जीवन अत्यन्त ही सुख से व्यतीत होगा। आपका अन्य लोग से मधुर एवं सुशील व्यवहार रहेगा।

कन्या राशि में उत्पन्न होने के कारण आपके हाथों की लम्बाई अधिक होगी तथा दाँत, नाक, कान तथा मुख मंडल सुन्दर एवं दर्शनीय होंगे। स्त्रियों के लिए आपके मन में स्नेहाधिक्य रहेगा। आप एक उच्च कोटि के विद्वान होंगे तथा कई धार्मिक संस्थाओं के उच्च पदों पर आप आसीन रहेंगे। धर्म के प्रति आपमें विशेष श्रद्धा एवं आस्था का भाव रहेगा तथा यत्न से धर्मानुपालन में तत्पर रहेंगे। आप सर्वदा अपने भाषण में प्रिय एवं मधुर वाणी का ही उपयोग करेंगे जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। साथ ही सत्य एवं शुद्धता के प्रति भी आप विशेष रूप से ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक इसका पालन करेंगे। आप एक धैर्यवान पुरूष होंगे फलतः सभी कार्यों को शीघ्रता से नहीं अपितु धैर्यपूर्वक सम्पन्न करेंगे। परोपकारी वृत्ति भी आपके मन में विद्यमान रहेगी तथा इस वृत्ति का आप पालन करते रहेंगे। साथ ही समस्त जीव तथा प्राणियों के प्रति आपके मन में दया एवं करूणा का भाव विद्यमान रहेगा। देखने में आपका सौन्दर्यशाली रूप सभी को आकर्षित करेगा। आपका सम्पूर्ण जीवन सुख एवं वैभव से सम्पन्न होगा लेकिन संतति संख्या में कन्याओं की संख्या अधिक तथा पुत्रों की संख्या अल्प मात्रा में रहेगी।

स्त्रीलोलो लम्बबाहुर्ललिततनुमुखश्चारुदन्ताक्षिणिकर्णो।
विद्वानाचार्य धर्मा प्रियवचनयुतः सत्यशील प्रधानः।।
धीरः सत्वानुकम्पी परविषयरतः क्षान्तिसौभाग्यभागी।
कन्याप्रायप्रसूतिबहुसुतरहितः कन्यकायां शशाङ्कः।।

सारावली

आप लज्जा तथा आलस्यमय दृष्टि से युक्त होकर गमनशील रहेंगे। आपके कंधे तथा भुजाएँ भी शिथिलता से युक्त होंगी। आप समस्त प्रकार के सुखों का आनन्द पूर्वक अपने जीवन काल में उपभोग करेंगे तथा नाना प्रकार की कलाओं के आप ज्ञाता रहेंगे। विविध प्रकार के शास्त्रों के तत्व ज्ञान को प्राप्त करने में भी आप सफल रहेंगे। सभी वर्गों के प्रति कार्य करने की इच्छा का आप में बाहुल्य रहेगा इसके अतिरिक्त आप किसी अन्य मित्र या संबंधी के घर एवं धन का उपयोग करने वाले भी होंगे तथा विदेश जाने की इच्छा भी आप में निरन्तर बनी रहेगी।

व्रीळामंथरचारूवीक्षणगतिः स्रस्तांसवाहुः सुखी।
श्लक्षणः सत्यरतः कलासुनिपुणः शास्त्रार्थविद्धार्मिकः।।
मेधावी सुरतप्रियः परगृहे वितैश्च संयुज्यते।
कन्यायां परदेशगः प्रियवचः कन्याप्रजोळल्पात्मजः।।

बृहज्जातकम्

आप स्त्री जाति को अपनी हास्य एवं विलासी क्रियाओं एवं मुद्राओं के द्वारा प्रसन्न करने तथा अपनी ओर आकर्षित करने की कला में अत्यन्त निपुण होंगे। आपका स्वभाव छल कपट विहीन तथा चाल चलन उत्तम होगा। आप हमेशा अच्छे कार्यों को करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे पापकर्मों में आप की कोई भी अभिरूचि नहीं होगी। साथ ही आप एक सौभाग्यशाली पुरूष होंगे तथा अपने जीवन के अधिकाँश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को भाग्यबल से ही सम्पन्न करने में सफलता को अर्जित करेंगे।

युवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिबिलासकुतूहलैः।
विनयशील सुताजननोत्सवै सुविधिना सहितः पुभान।।

जातकाभरणम्

आपकी बुद्धि छल से विहीन निर्मल रहेगी तथा लेखन कार्य के प्रति आप हमेशा यत्नशील रहेंगे। अतः काव्य सृजन करने में सफलता अर्जित करेंगे। आपका स्वभाव शान्त होगा परन्तु कभी कभी आपको नेत्र कष्टों से पीड़ित रहना पडेगा साथ ही आप गुरूजनों के हित कार्यों को करने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

विमलमति सुशीलो लेखबुद्धिः कविश्च।
कृषिबलगुणशाली शान्तियुग्मः स्वभावः।।
भवति नयनरोगी धार्मिकः शीलयुक्तः।।
गुरूजन हितकर्ता कन्यका यस्य राशिः।।

जातकदीपिका

आप विलासमय प्रवृति से युक्त रहेंगे तथा समस्त भौतिक एवं विलासमयी वस्तुओं पर खुले हाथ से व्यय करेंगे तथा जीवन में आनन्द पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप भद्र पुरूषों के प्रति अत्यन्त ही सम्मान का भाव अपने मन में रखेंगे तथा ये लोग भी प्रायः आपसे प्रसन्न

तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आप अपनी दानशील प्रवृति का प्रदर्शन समयानुसार करते रहेंगे। वैदिक धर्म के प्रति आपकी पूर्ण आस्था एवं श्रद्धा रहेगी तथा जीवन में इसका पालन करेंगे। समाज में आप एक लोकप्रिय व्यक्ति होंगे जिसे उचित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। संगीत तथा अभिनय के प्रति आप पूर्ण रूपेण समर्पित रहेंगे तथा आजीवन इनसे आप का गहन संबंध रहेगा। साथ ही आप प्रवासी भी होंगे।

विलासी सुजनाह्लादी सुभगो धर्मपूरितः।
दातादक्षः कविर्बुद्धि वेदमार्ग परायणः।।
सर्वलोकप्रियो नाट्यगान्धर्व व्यसने रतः।
प्रवासशीलः स्त्री दुखी कन्याजातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आपका सम्पूर्ण जीवन सुख ऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा। कामभावना संबंधी भावनाओं की आप में प्रबलता रहेगी फलतः आप इससे यदा कदा व्याकुलता का एहसास करेंगे। अन्य लोगों के प्रति आपके मन में सहानुभूति एवं सद्भावना विद्यमान रहेगी इसके अतिरिक्त विविध शास्त्रों तथा कलाओं में भी आप निपुण रहेंगे।

कन्यास्थे विषयातुरो ललितवाग्मि विद्याधिको भोगवान।
जातकपरिजातः

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी श्रेष्ठ तथा मधुर होगी जो अन्य जनों को सुनने में प्रिय लगेगी। आप सत्य के पालन में हमेशा तत्पर रहेंगे। आप अत्यन्त ही सरल बुद्धि के स्वामी होंगे। आप अपने भावों को सादगी से प्रकट करेंगे तथा अन्यजनों के भावों को सादगी से ग्रहण करेंगे। आप शुद्ध एवं सात्विक भोजन करना पसन्द करेंगे। गुणों के विषय में आप पूर्ण ज्ञाता होंगे तथा स्वयं भी श्रेष्ठ विद्वानों के द्वारा वर्णित गुणों से सर्वदा युक्त रहेंगे। आप सभी प्रकार की सम्पति तथा धनैश्वर्य से सर्वप्रकार सम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में कभी इनका अभाव महसूस नहीं करेंगे।

आपका सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य दर्शनीय रहेगा तथा स्वभाव से ही दानशीलता की प्रवृति से युक्त रहेंगे। सादगी आपको बहुत पसन्द होगी तथा जीवन को सादगी पूर्ण ढंग से व्यतीत करने में आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। साथ ही अपने समाज में आप एक श्रेष्ठ विद्वान के रूप में पूज्य रहेंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

महिष योनि में पैदा होने के कारण आप वादविवादों तथा लड़ाई झगड़े के मामलों में सर्वथा विजयी रहेंगे। साथ ही शूरता तथा वीरता के लक्षणों से भी आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा साहस एवं वीरता के साथ अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। आपकी संतति संख्या भी अधिक होगी। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में पूर्ण निष्ठा व्याप्त रहेगी तथा यत्नपूर्वक धर्माचरण में तत्पर रहेंगे।

संग्रामे विजयी योद्धा सकामस्तु बहुप्रजः।
वाताधिको मन्दमतिर्नरो महिषयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् महिष योनि में उत्पन्न जातक युद्ध के मैदान में विजय प्राप्त करने वाला, योद्धा, कामाग्नि से प्रबल, अधिक संतति वाला, वायु प्रधान प्रवृति तथा धर्म के प्रति निष्ठावान रहता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त

रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए भाद्रपद मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तिथियां, श्रवण नक्षत्र, शुभयोग, कौलवकरण, शनिवार प्रथम प्रहर तथा मिथुन राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 अगस्त से 14 सितम्बर के मध्य 5,10,15, तिथियों, श्रवण नक्षत्र, शुभयोग , कौलवकरण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण तथा महत्वपूर्ण कार्यों को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शनिवार प्रथम प्रहर एवं मिथुन राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में व्यवधान उत्पन्न हो रहे हों तो ऐसे समय में अपने इष्ट देव गणेश जी की उपासना करनी चाहिए तथा गणेश चतुर्थी एवं बुधवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, पन्ना, हरा वस्त्र, मूंग की दाल इत्यादि पदार्थों का किसी सुपात्र को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप किसी सुयोग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा शुभ कार्यों में सफलता प्राप्त होगी।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।